

विषय : हिन्दी
कक्षा 7: "हम पंछी उन्मुक्त गगन के



जी बिजी मोल
टी. जी .टी हिंदी
केंद्रीय विद्यालय ,विकासपुरी,
नई दिल्ली

विषय सूची

एन. सी. आर. टी. पाठ्य पुस्तक	वसंत भाग -1
पाठ.....	1
पाठ का नाम	हम पंछी उन्मुक्त गगन के
सीखने के प्रतिफल.....	3
पाठ योजना.....	3
विषय व्याख्या / एक्सप्लनेशन कंटेंट	3...10
प्रश्न बैंक.....	11-12
धीमे सीखने वालों के लिए प्रश्न (Slow learner's Questions)	12
हॉट्स प्रश्न (High achiever's questions).....	12
जिज्ञासा प्रश्न (Curiosity Questions).....	12
सीखने के लिए गतिविधि (Activity for Learning).....	12
एक्सपेरेंटिअल कंटेंट.....	12....13
हॉट स्पॉट.....	13
माइंड मैप (मन मानचित्र).....	14
पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन.....	15

पाठ योजना

सीखने के प्रतिफल : बच्चों को आज़ादी का महत्व समझाना। बच्चों में हर जीव जंतु के प्रति स्नेह आदर की भावना उत्पन्न करना।

विषय : हिन्दी

उपविषय: कविता (हम पंछी उन्मुक्त गगन के)

अनुदेशनात्मक उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य:

1. छात्रों का हिन्दी विषय के प्रति रुचि उत्तपन करना।
2. छात्रों में शुद्ध एवं स्पष्ट पढ़ने व लिखने की क्षमता का विकास करना।
3. छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।

विशिष्ट उद्देश्य :

1. छात्रों को उचित गति , आरोह , अवरोह एवं भावानुसार कविता .पाठ करने के योग्य बनाना।
2. छात्रों को कविता सुनाकर उसका अर्थ ग्रहण करने एवं भावानुभूति करने के योग्य बनाना।
3. छात्रों की कल्पना शक्ति को विकसित करना।

शिक्षण विधि : प्रश्नोत्तर , व्याख्या विधि।

अनुदेशनात्मक सामग्री : चाक , श्याम पट , पी.पी.टी, वीडियो आदि।

पूर्व ज्ञान :

छात्र पशु पक्षियों के जीवन से भली भाँती परिचित हैं तथा विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों के जीने के वास के बारे में भी जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

1. प्राणियों को कितने भागों में विभक्त किया गया है ?
2. थलचर, जलचर और नभचर जीवों के नाम बताओ ?
3. पक्षियों का वास स्थान कहाँ है?

उद्देश्य कथन

छात्रों, आज हम पिंजरे में बंध पक्षियों की व्यथा के बारे में इस कविता द्वारा पढ़ेंगे और समझेंगे।

लेखक परिचय : अध्यापक **पी.पी.टी** की सहायता से कवि परिचय करेगा।

कवि परिचय : अध्यापक पी. पी. टी. के द्वारा हम पंछी उन्मुक्त गगन के कवि **श्री शिवमंगल सुमन** का संक्षिप्त परिचय देगा।

- लेखक – **शिवमंगल सिंह सुमन**
जन्म – जन्म 5 अगस्त 1915 को झगरपुर उन्नाव (उत्तरप्रदेश में) हुआ।
- मृत्यु - 27 नवंबर 2002
- प्रमुख कृतियाँ - हिल्लोल, मिट्टी की बारात, प्रलय सृजन और वाणी की व्यथा हैं।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण, पद्म श्री, भारत भारती पुरस्कार जैसे बड़े सम्मानों से सम्मानित किया गया है।
- इनकी कविताओं की भाषा सरल और दिल को छू लेने वाली है।

कविता का सार : अध्यापक **पी.पी.टी** की सहायता से **कविता का सार स्पष्ट** करेगा।

कवि शिवमंगल सिंह सुमन ने “हम पंछी उन्मुक्त गगन के” कविता में पक्षियों के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व का वर्णन किया है। कविता में पक्षी कहते हैं कि हम खुले आसमान में घूमने वाले प्राणी हैं, हमें पिंजरे में बंद कर देने पर हम अपने सुरीले गीत नहीं गा पाएंगे।

हमें सोने के पिंजरे में भी मत रखना क्योंकि हमारे पंख पिंजरे से टकराकर टूट जाएंगे और हमारा जीवन खराब हो जाएगा। हम स्वतंत्र

होकर नदी-झरनों का जल पीते हैं ,पिंजरे में हम भला क्या खा-पी पाएंगे।
हमें गुलामी में सोने के कटोरे में मिले मैदे से ज्यादा , स्वतंत्र होकर
कड़वी निबौरी खाना पसंद है।

आगे कविता में पंछी कहते हैं कि पिंजरे में बंद होकर तो पेड़ों की ऊँची
टहनियों पर झूला झूलना अब एक सपना मात्र बन गया है। हम आकाश
में उड़कर इसकी हदों तक पहुंचना चाहते थे। हमें आकाश में ही जीना-
मरना है।

अंत में पक्षी कहते हैं कि तुम चाहे हमारे घोंसले और आश्रय उजाड़ दो।
मगर ,हमसे उड़ने की आज़ादी मत छीनो , यही तो हमारा जीवन है।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह ,अवरोह के साथ सम्पूर्ण
कविता का सस्वर पठन करेगा । इसके बाद प्रत्येक छंद का **आदर्श वाचन करेगा**
और शब्द अर्थ बताते हुए व्याख्या करेगा ।

पद्यांश :

हम पंछी उन्मुक्त गगन के पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक—तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे ।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ पहले छंद
का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक- दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए
निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर
करेगा ।

अध्यापक कथन: अध्यापक **पी.पी .टी** की सहायता से पाठ में आए हुए शब्दों के अर्थों
को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

शब्दार्थ

उन्मुक्त—आजाद, स्वतंत्र ।

कनक—तीलियाँ—सोने की छड़ें, सलाखें ।

पुलकित—रोमांचित

व्याख्या : कवि शिवमंगल सिंह सुमन ने “हम पंछी उन्मुक्त गगन के” कविता की इन पंक्तियों में पंछियों की स्वतंत्र होने की चाह को दर्शाया है। इन पंक्तियों में पक्षी मनुष्यों से कहते हैं कि हम खुले आकाश में उड़ने वाले प्राणी हैं, हम पिंजरे में बंद होकर खुशी के गीत नहीं गा पाएंगे। आप भले ही हमें सोने से बने पिंजरे में रखो, मगर उसकी सलाखों से टकरा कर हमारे कोमल पंख टूट जाएंगे।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा ।

प्रश्न : पक्षी गाना क्यों नहीं गा पाएँगे ?

प्रश्न : पुलकित पंख, में कौन सा अलंकार है ?

पद्यांश :

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे—प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरीय
कनक—कटोरी की मैदा से।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ दूसरे छंद का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक- दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगा।

अध्यापक कथन: अध्यापक **पी.पी.टी** की सहायता से छंद में आए हुए शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

शब्दार्थ

कटुक : कड़वा

निबौरी : नीम का फल

कनक : सोना

- **व्याख्या** : आगे पक्षी कह रहे हैं कि हम तो बहते झरनों-नदियों का जल पीते हैं। पिंजरे में रहकर हमें कुछ भी खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। चाहे आप हमें सोने की कटोरी में स्वादिष्ट पकवान लाकर दो, हमें तब भी अपने घोंसले वाले नीम की निबौरी ज्यादा पसंद आएगी। पिंजरे में हम कुछ भी नहीं खाएंगे और भूखे-प्यासे मर जाएंगे।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा।

प्रश्न 1. भूखे - प्यासे में कौन सा समास है ?

प्रश्न 2. कनक-कटोरी, में कौन सा अलंकार है ?

पद्यांश :

स्वर्ण—शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ तीसरे छंद का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक-दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगा।

अध्यापक कथन: अध्यापक **पी .पी . टी** की सहायता से छंद में आए हुए शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

शब्दार्थ

स्वर्ण—शृंखला : सोने की कड़ी अथवा जंजीर

फुनगी : कोपले

व्याख्या : कवि शिवमंगल सिंह जी ने “हम पंछी उन्मुक्त गगन के” कविता की इन पंक्तियों में, पिंजरे में बंद पक्षियों का दुख-दर्द दिखाया है। पिंजरे में बंद रहते-रहते बेचारे पक्षी अपनी उड़ने की सब कलाएं और तेज़ उड़ना भूल चुके हैं। कभी वो बादलों में उड़ा

करते थे, पेड़ों की ऊँची टहनियों पर बैठा करते थे। अब तो उन्हें बस सपने में ही पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर बैठना नसीब होता है।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा ।

प्रश्न1. पिंजरबद्ध पक्षी क्या भूल गया है ?

पद्यांश :

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण—सी चोंच खोल
चुगते तारक—अनार के दाने ।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ चौथे छंद का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक- दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगा ।

अध्यापक कथन: अध्यापक पी . पी . टी की सहायता से छंद में आए हुए शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

शब्दार्थ

अरमान : इच्छा

- **व्याख्या :** पंछियों के मन में यह इच्छा थी कि वो उड़कर आसमान की सभी सीमाओं को पार कर जाएं और अपनी लाल चोंच से सितारों को दानों की तरह चुनें। मगर, इस गुलामी भरी ज़िंदगी ने उनके सभी सपनों को चूर-चूर कर दिया है। अब तो पिंजरे में कैद होकर रह गए हैं और बिल्कुल खुश नहीं हैं।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा ।

प्रश्न1. नीले नभ में कौन सा अलंकार है ?

प्रश्न 2. 'लाल किरण—सी चोंच' में कौन सा अलंकार है ?

प्रश्न 3. 'तारक—अनार' में कौन सा अलंकार है ?

पद्यांश :

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा—होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ पांचवे छंद का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक-दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगा।

अध्यापक कथन: अध्यापक **पी. पी. टी** की सहायता से छंद में आए हुए शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

व्याख्या : कवि शिवमंगल सिंह सुमन जी ने "हम पँछी उन्मुक्त गगन के" कविता की इन पंक्तियों में पक्षियों की स्वतंत्र होकर उड़ने की इच्छा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है।

इन पंक्तियों में पक्षी कहते हैं, कि अगर हम आजाद होते तो उड़कर इस आसमान की सीमा को ढूँढने निकल जाते। अपनी इस कोशिश में हम या तो आसमान को पार कर लेते, या फिर अपनी जान गंवा देते। पक्षियों की इन बातों से हमें पता चलता है कि, उन्हें अपनी आज़ादी कितनी प्यारी है।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा।

प्रश्न 1. उपयुक्त पंक्तियों में आए मुहावरें बताओ।

पद्यांश :

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न—भिन्न कर डालो,

लेकिन पंख दिए हैं तो

आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

आदर्श वाचन : अध्यापक उचित हाव भाव एवं आरोह अवरोह के साथ अंतिम छंद का सस्वर पठन करेगा

अनुकरण वाचन : अध्यापक कक्षा के एक-दो बच्चों से भी वाचन करने के लिए निर्देश देगा और उनके वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगा तथा उनके पठन दोषों को दूर करेगा।

अध्यापक कथन: अध्यापक **पी . पी. टी** की सहायता से छंद में आए हुए शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करेगा।

शब्दार्थ

नीड़ – घोंसला

विघ्न – बाधा

व्याख्या: “हम पंछी उन्मुक्त गगन के”, कविता की आखिरी पंक्तियों में मनुष्यों से उन्हें स्वतंत्र कर देने की विनती की है। वो मनुष्यों से कहते हैं कि आप हमसे हमारा घोंसला छीन लो, हमें आश्रय देने वाली टहनियां छीन लो, हमारे घर नष्ट कर दो, लेकिन जब भगवान ने हमें पंख दिए हैं, तो हमसे उड़ने का अधिकार ना छीनो। कृपया हमें इस अंतहीन आकाश में उड़ने के लिए स्वतंत्र छोड़ दो।

भाव विश्लेषण एवं सौंदर्यानुभूति : अध्यापक प्रश्नो और कथन की सहायता से कविता के भाव को स्पष्ट कर सौंदर्यानुभूति करेगा

प्रश्न 1. उपयुक्त पंक्तियों में आए मुहावरें बताओ।

पुनरावृत्ति : छात्रों द्वारा कविता का सार प्रस्तुत किया जाएगा।

गृह कार्य :

1. कविता में आए किन्ही 10 शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो।
2. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखना।
3. एक पक्षी का सुन्दर सा चित्र बनाओ और उसके बारे में एक अनुछेद लिखो।

प्रश्न बैंक (Question bank)

प्र 1. “चुगते तारक—अनार के दाने ”(संज्ञा शब्द छाँटो)

1. तारक 2. चुगत 3. अनार 4. दाने

प्र 2. बंधन का विलोम शब्द छाँटो :

1. जीवन 2. पिंजरबद्ध 3. मुक्ति 4. गति

प्र 3. हम पंछी उन्मुक्त गगन के पाठ के रचयिता कौन हैं ?

1. अजीत वर्मा 2. शिवमंगल सिंह सुमन 3. महादेवी वर्मा 4. अन्य कोई

प्र 4. आकाश का पर्यायवाची क्या है ?

1. नभ 2. गगन 3. आसमान 4. सभी विकल्प

प्रश्न 5 पंछी अपना मधुर गीत कब नहीं गा पाएँगे ?

प्रश्न 6 पिंजरे में पंख फ़ैलाने पर पंछियों की क्या दशा होगी ?

प्रश्न 7 पंछियों के क्या अरमान थे ?

प्रश्न 8 कविता में पंछी क्या याचना कर रहे हैं ?

प्रश्न 9 इस कविता के माध्यम से पंछी क्या संदेश देना चाहते हैं ?

प्रश्न 10 हर तरह की सुख सुवधाएं पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

प्रश्न 11 पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन - कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते थे ?

Slow learner's Question

.धीमे सीखने वालों के लिए प्रश्न

प्रश्न 1. पंछी कैसा जीवन चाहते हैं ?

प्रश्न 2. पंछी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं ?

हॉट्स प्रश्न (High achievers questions)

प्रश्न1. भाव स्पष्ट कीजिए .

“या तो क्षितिज मिलन बन जाता , या तनती साँसों की डोरी”

जिज्ञासा प्रश्न (Curiosity Questions)

प्रश्न1. पक्षी गाना क्यों गाते हैं ?

प्रश्न 2. सब पक्षी तोते के जैसे बातें क्यों नहीं करते ?

प्रश्न 3. पक्षी का जन्म कैसे हुआ होगा ?

सीखने के लिए गतिविधि /Activity for learning

हर दिन अपने घर के बाहर एक बर्तन में पशु पक्षियों के लिए पानी और खाना अवश्य रखें ।

अपने आस पास के पशु पक्षियों का ध्यान रखें ,उनको भोजन,पानी आदि प्रदान करें और एक अच्छे मनुष्य बनें और एक बेहतर दुनिया का निर्माण करें ।

एक्सपेरेंटिअल कंटेंट

हम में से कुछ लोग पालतू जानवर घर पर पालते हैं । हमें ,इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि हम उन्हें बंधन में जकड़ कर ना रखें । उन्हें , अपने परिवार का सदस्य मानें और प्यार से रखें । पशु , पक्षी केवल बोल नहीं पाते लेकिन उन में भी वे सारी भावनाएं होती हैं जो हम मनुष्यों में होती हैं ।

हर पशु ,पक्षी को आज़ाद जीवन व्यक्त करने देना चाहिए । यह उसका जन्म सिद्ध अधिकार है और ईश्वर द्वारा बनाया गया प्रकृति का नियम भी है । लेकिन हम मनुष्य अपने स्वार्थ और मनोरंजन के लिए इन बेजुबान प्राणियों का शोषण करते हैं । हम पिंजरबन्ध पक्षियों की व्यथा,और वेदना का अनुमान नहीं लगा सकते हैं क्योंकि हम सदैव आज़ाद जीवन व्यतीत करते हैं ।हम पिंजरबन्ध पक्षियों की व्यथा,और वेदना का अनुमान तभी लगा सकते हैं जब हम पिंजरबन्ध बन जाएं । कोरोना **lockdown** की वजह से जब हम सबको कुछ महीने घर पर ही रहना पड़ा तो हम सबको अवश्य पिंजरबन्ध पशु पक्षी की वेदना ,दुख ,कष्ट ,का एहसास हुआ होगा । केवल कुछ समय के लिए घर पर रहना पड़ा तो हम कितने परेशान और दुखी हो गए थे। अब हम पिंजरबन्ध पक्षियों की व्यथा,और वेदना का अनुमान लगा सकते हैं और, उनकी पीड़ा

को बेहतर समझ सकते हैं। अर्थात् हम सबको प्रण लेना चाहिए कि किसी भी प्राणी को पिंजरबन्ध या कैद में नहीं रखेंगे। हम किसी पशु पक्षी को पीड़ा नहीं पहुंचाएंगे और अगर किसी को ऐसा गलत काम करते देखेंगे तो उसको रोकने का प्रयास अवश्य करेंगे। हमें हर एक प्राणी का आदर करना चाहिए, तभी भगवान की इस दुनिया में केवल स्नेह ही रहेगा।

हॉट स्पॉट :

“लाल किरण—सी चोंच खोल

चुगते तारक—अनार के दाने ”

प्रश्न 1. पंछी कैसे तारों को छू सकते हैं ?